DEEBALI

WALL-MAGAZINE

2021 - 2022 (I)

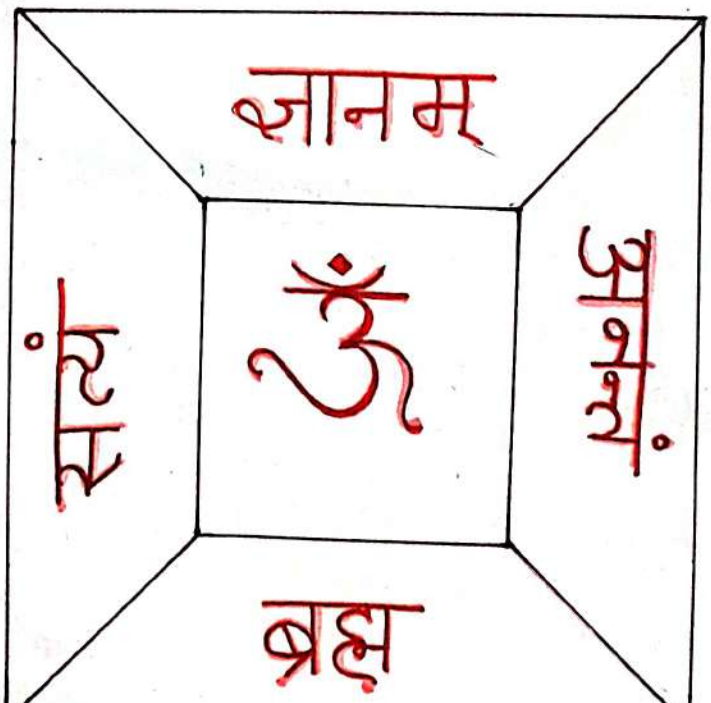

शरद ऋतु का आगमन

सम्पादकीय

शरद ऋतु का आगमन

वर्षा विगत सरद ऋतु आई । लछिमन देखहु परम सुहाई ॥
फूले कास सकल महि छाई । जनु बरसा कृत प्रगट बुढ़ाई ॥

पंचवटी में श्रीराम-लक्ष्मण से शरदागमन का वर्णन करते हुए उपरोक्त पंक्तियां कहते हैं। शरद ऋतु की बात ही ऐसी है कि जीव-जंतु, पंछी, मनुष्य तथा ईश्वर तक इसके आगमन पर प्रफुल्लित होते हैं।

वर्षा ऋतु की समाप्ति के पश्चात शरद ऋतु का आगमन होता है जिसे हम जाड़ का मौसम भी कहते हैं। अश्विन और कार्तिक शरद ऋतु के दो मास होते हैं। इस ऋतु में आकाश निर्मल और कहीं-कहीं श्वेत वर्ण मेघ युक्त होता है। सरोवर कमलों सहित हंसों से शोभायमान होते हैं। शरद ऋतु में रातें ठंडी और सुहावनी हो जाती हैं। वन कुमुद और मालती के फूलों से सुशोभित होते हैं। अनगिनत तारों की चमक और चंद्रमा की चांदनी से रात्रि का अन्धकार दूर हो जाता है। संसार ऐसा लगता है मानो दूध के सागर में स्नान कर रहा हो।

इस ऋतु में दिन और रात का तापमान प्रायः सामान्य होता है। आलस्य के स्थान पर शरीर में चुस्ती और कार्य करने का उत्साह बढ़ जाता है। फल और सब्जियों की बहार आ जाती है। विभिन्न पदार्थ खाने को दिल करता है। चेहरे पर खुशी और जीवन में प्रसन्नता आ जाती है। शरद ऋतु अपने साथ कई त्योहार भी लाती है। जैसे दशहरा और दीपावली। जिनमें लोग अपनों के संग खुशियां मनाते हैं तथा नाना प्रकार के व्यंजन खाते-खिलाते हैं। इतने में कार्तिक पूर्णिमा का स्नान आता है। इसके साथ ही शरद ऋतु की समाप्ति, हेमन्त के आगमन को सूचित करती है।

अगला संस्करण

" ठिठुरती सर्दी, अनकही बातें "

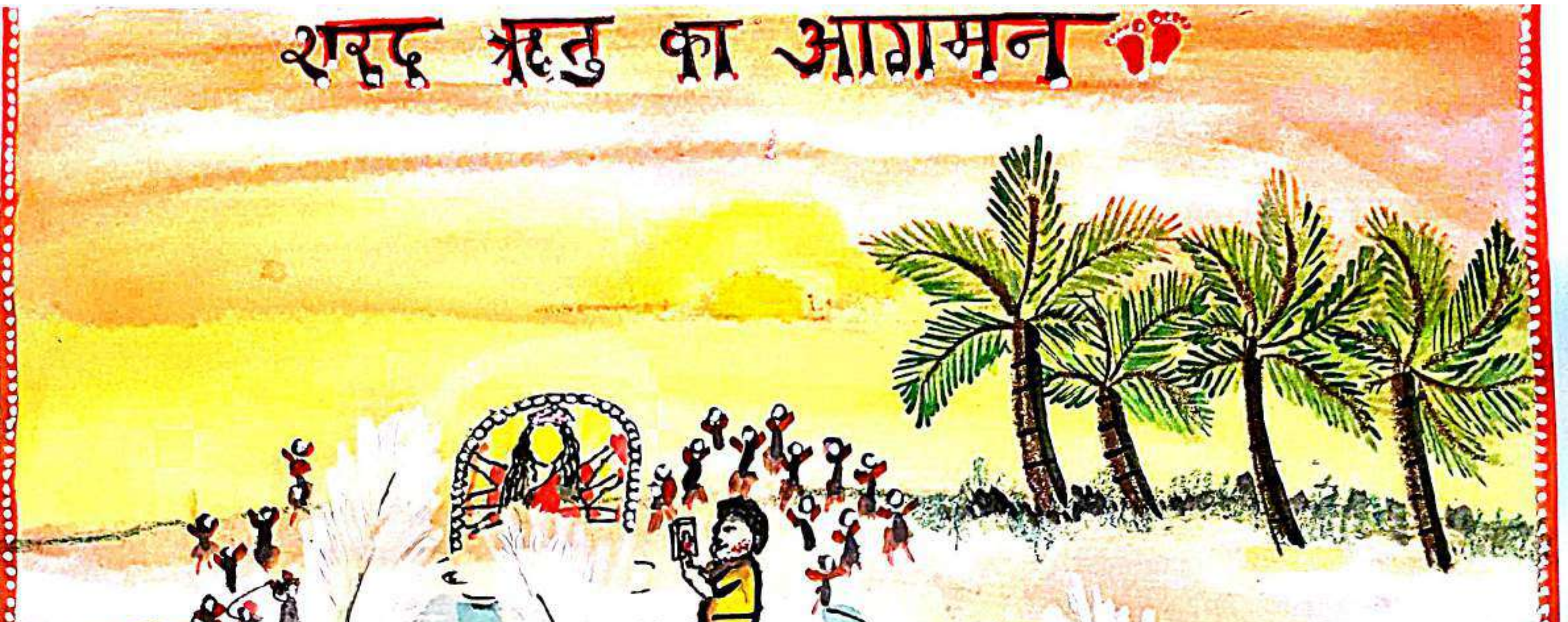
शरद ऋतु का आगमन
सुनिधि कुमारी
बी॰ एड (1st Sem)
क्रमांक :- 158

'शरद ऋतु'

थम चुकी हैं, वृष्टि नभ में छायी स्वर्णिम लालिमा है;
हो चला मौसम सुहावना, सोने-सी चमकती धरा है।
खग-विहंगो का मचलता शोर, शरद ऋतु का आगमन
खास है;

करते स्वागत सारी प्रकृति इस ऋतु का,
आज धरती का प्रांगण खास है।
लेकर ताप सूर्य का धीमा, गुनगुनाती धूप है।
थम चुकी हैं वृष्टि, नभ में छायी स्वर्णिम लालिमा है।
होगी अमृत वर्षा रात्रि प्रहर, चाँदी-सी चमकती
धरा है....।।
देव बरसाते अमृत वर्षा.....।
शरद ऋतु की मनमोहक छटा है।
होगी लंबी काफी, रात मगर, सुगंधित-सुगंधित
पुष्पों से महकती गली और चौबारे हैं।।
थम चुकी हैं वृष्टि, नभ में छायी स्वर्णिम लालिमा है,
सुबह खिलेंगे पुष्प 'कास' के,
आने वाली शक्ति स्वरूपा है....।
होगी आनंदित धरा नवों दिन,
शरद ऋतु की छायी लालिमा है।।
प्रकृति नाचती हर रंगों में, धरती की निराली छटा है,
हरियाली ऐसी, धूप और हवा का ऐसा मेल है।
सुख अनुभव करते प्राणी, दृश्य ऐसा खास है,
थम चुकी है वर्षा, नभ में छायी स्वर्णिम लालिमा है।।

राखी प्रसाद
D. El. Ed (1st Year)
Roll. no. - 47

"शरद ऋतु का आगमन"

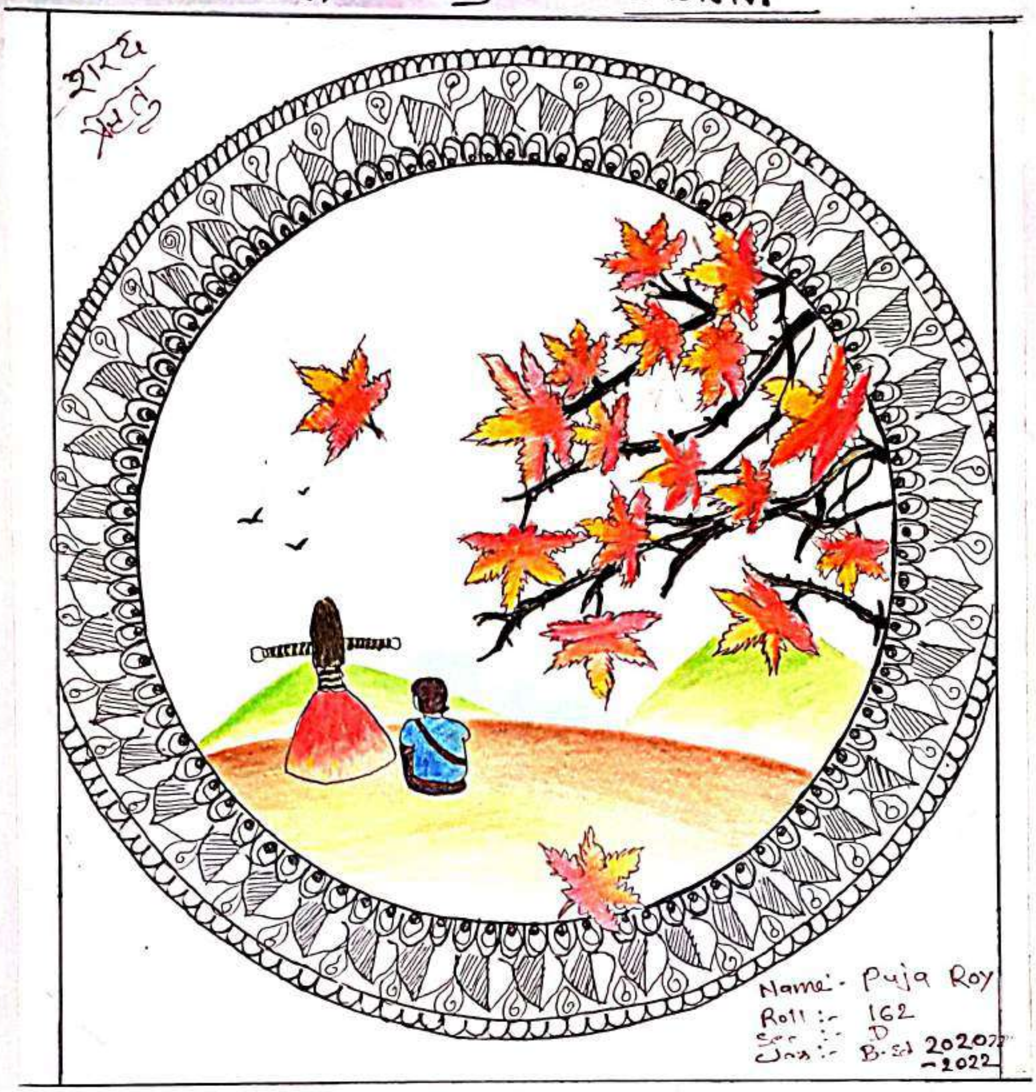

शरद ऋतु
Name:- Puja Roy
Roll :- 162

शरद ऋतु का आगमन
PALLAVI KUMARI
ROLL NO- 110 (SEC-D)
B.Ed 1st SEM

'शरद ऋतु का आगमन'

लो आ गया फिर से शरद् ऋतु,
मन को मोह लेने वाली मनमोहक ऋतु।

पक्षियों का यूँ चहकना और लोगों को जगाना
कि दे रही है ये भी दस्तक, कि शरद् ऋतु को है अब आना।

सूरज भी लगा है बादल में छिप-छिप कर इतराने
कह रहा वो भी बादल से कि शरद ऋतु को है अब आना।
ना जानें किसका इंतज़ार कर रही हैं ये हवाएं भी
सड़कों पर बिखेर के रंग-बिरंगे पत्ते, स्वागत कर रही ये भी।
करने स्वागत शरद ऋतु का, पीली सरसों ने सबका मन बहलाया है।
देख लो ज़रा यह नज़ारा, लगे ऐसे जैसे धरा ने नवल रूप बिखेरा है।

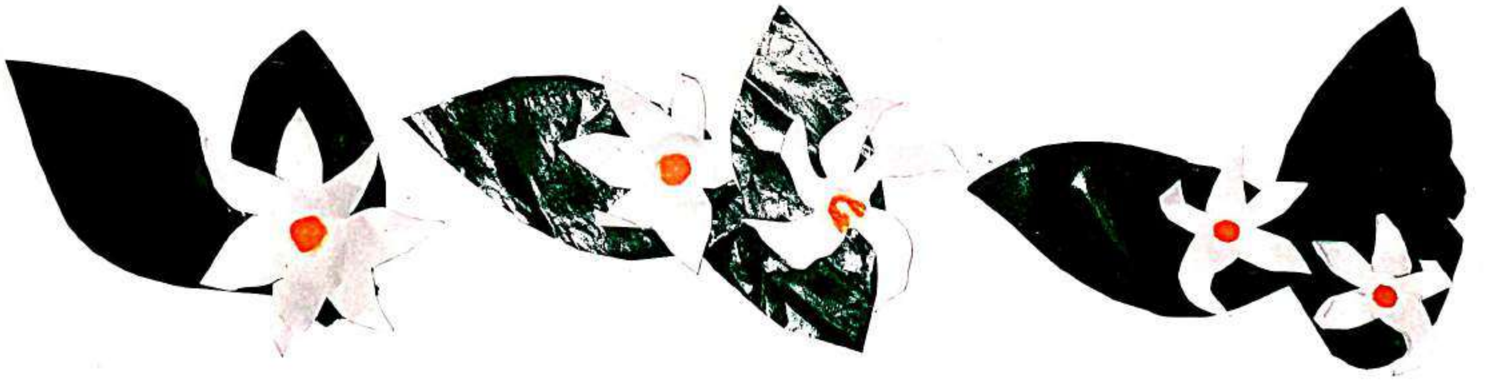

"शरद ऋतु का आगमन"

स्वच्छ नीला आकाश, चिलचिलाती धूप,
देखता ही रह गया, शिशिर का यह रूप।
मन मचला कि क्यों ना, बाहर घूम आऊं,
तापमान ऋतुतीस, जाऊँ तो कैसे जाऊं
धवल चादर है, बिछी, अवनि पर चहुंओर
निष्ठुर हिमानी हवा ने, मचा रखा है शोर,
ठूंठ वृक्ष जीवन हेतु तपस्या में तल्लीन,
जैसे भभूत लोवित साधु ध्यान से हो लीन।
नदी-सरोवर जमकर, स्फटिक शिला बन गए
अहिल्या जैसी स्थिति, पानी से पत्थर बन गए।

रीना कुमारी
43
B.Ed 2020-22

Rajni Kumari Singh
Roll no- 44
B.Ed

शरद ऋतु का आगमन

बर्षा विगत सरद रितु आई, लछिमन देखहु परम् सुहाई।
फुले कास सकल महि छाई, जनु बरसा कृत प्रगट बुढ़ाई।

इसका तात्पर्य इस प्रकार है। श्री राम जी लक्ष्मण जी से कहते हैं, हे लक्ष्मण देखो, बर्षा बीत गई और परम् सुन्दर शरद ऋतु आ गई फूले हुए कास से सारी पृथ्वी छा गई। मानो बर्षा ऋतु ने (कास रूपी सफ़ेद बालो के रूप में) अपना बुढ़ापा प्रकट किया है। हमारे देश भारत में रामायण और महाभारत काल से लेकर अब तक शरद ऋतु का वर्णन बहुत ही सुन्दर तरीके से कवियों ने किया है। शरद ऋतु पर मेरी कुछ पंक्तियां इस प्रकार है —

जब कमल कुमुदनियों से भर उठते हैं ताल-तड़ाग
जब दिखने लगता है मनोहर नील धवल,
जब अमृतवर्षिणी चांदनी से चमकते लगते हैं
नीले नैन
तब लगता है हो गया भारत में शरद ऋतु का
आगमन ....
जब वृष्टि थम जाती है मौसम हो जाता है सुहावना,
दिन होता है सामान्य तो रात होती है मनोहारी,
अश्विन मास में शरद पूर्णिमा के आसपास शरद
ऋतु का सौंदर्य है दिखता
और इस तरह होता है शरद ऋतु का आगमन ॥

Name — Pragya Kumari
Class — B.ED, Sction — A.
Roll No. 95

Session:- 2020-2022

"शरद ऋतु का आगमन"

बादल हटे, कुहासे अपनी जगह ले चुके
क्योंकि प्रकृति नहीं चाहती, काम धरा पर कभी रुके।
मौसम करवट, जब भी लेता है,
काम नया सबको देता है,
कहीं खुशी, तो कहीं हो रहा दमन,
शरद ऋतु का आगमन।
हरी सब्जियों का तांता लगता है।
हर सुबह, जब बाजार सजता है,
लोग गर्म कपड़े पहनतें हैं,
जब भी बाहर को जाते हैं,
बदला लगता है बहार-ए-चमन,
शरद ऋतु का आगमन,
त्योहारों का तांता लग जाता है,
पुष्प गेंदा भी लग जाता है।
भव कब परिर्वतन से खली रहा है,
तभी, धरती से सुंदर, दुनिया नहीं है।
और को कम शाम से ज्यादा सताती है पवन।
शरद ऋतु का आगमन।

Name :- Manshi Kumari
Class :- B.Ed
Roll No :- 39

"शरद ऋतु का आगमन"

हरसिंगार के फूल झड़े हैं,
मौसम ने करवट बदली है।
शरद ऋतु आने वाली है,
फूलों ने संदेशा भेजा है।
खुशबूदार पवन का झोंका,
खिड़की से भीतर आया है।

वर्षा ऋतु ने मांगी विदाई,
अगले बरस में फिर आऊंगी।
गर्मी और उमस को भी,
मैं अपने संग ही ले जाऊंगी।
कभी-कभी छींटे पानी के,
जब-तब आकर दे जाऊँगी।

ये मौसम त्योहारों का है,
नवरात्रि, दशहरा और दिवाली,
भाईदूज फिर शरद पूर्णिमा,
मिल-जुल कर सभी मनायेंगे,
शरद ऋतु ये बड़ी सुहानी,
मनमोहक है और मस्तानी।

नाम - नेहा कुमारी
कक्षा - B.Ed.
Session - 2020-2022
क्रमांक - 146 'D'

AUTUMN POEM:

The autumn comes, a maiden fair
In slenderness and grace,
With nodding rice — stem in her hair
And lilies in her face.
In flowers of grasses she is clad:
And as she moves along,
Birds greet her with their cooing glad
Like a bracelet's tinkling song.

A diadem adorns the night
Of multitudinous stars;
Her silken robe is white moonlight,
Set free from cloudy bars;
And on her face (the radiant moon)
Bewitching smiles are shown:
She seems a slender maid, who soon
Will be a woman grown.

Name : Seema Kumari
Class : D.El.Ed (1st year)
Roll No : 27

AUTUMN POEM

LEAVES FALLING

Autumn is coming,
Leaves are falling.
Crisp... crasp... crunch
are the sounds of leaves
When stepping on them
Silent maids all the
sounds of autumn all an amazing sounds.
All through autumn
leaves are awesome colours
Autumn is beautiful all
over and filled with
Wonderful colours.

Name : Sandhya Suman
Class : D.El.Ed (1st year)
Roll No : 30

शरद ऋतु का आगमन

शरद ऋतु, भारत में चार ऋतुओं में से एक है, जो दिसंबर माह से शुरू होती है और मार्च माह के अंत तक रहती है। कम तापमान वाले सूर्य की रोशनी ठंडी के दिन या सर्दियों के दिन बहुत ही अच्छे और बहुत ही सुहावने रहते हैं। कभी-कभी तो हम घने बादलों, कोहरा और धुंध के कारण सूरज को भी नहीं देख पाते हैं हालाँकि, अन्य सर्दियों के दिनों में आसमान बहुत ही साफ और नीला दिखाई देता है। अटैक के दौरान तेज गति से तेज रफ्तार से यह वर-वर्द्धक और वरीय सावन संतरा, अमरूद, चीकू, पपीता, आँवला, ऐंगर का मौसम है।

शरद ऋतु को हम इस तरह से भी देख सकते हैं— रामायण में जब श्री राम जी को चौदह वर्ष का वनवास हुआ था। तब जब वो वनवास के समय पंचवटी में थे उस समय वर्षा ऋतु का वर्णन इस प्रकार किया गया था।

वर्षा विगत शरद रितु आई, लछिमन देखहु
परम सुहाई।
फुले कास सकल महि छाई, जनु बरसा कृत
प्रगट बुढ़ाई।

इसका तात्पर्य यह है कि श्री राम जी लक्ष्मण जी से कहते हैं, हे लक्ष्मण! देखो वर्षा बीत गई और परम सुंदर शरद ऋतु आ गई फूले हुए कास से सारी पृथ्वी छा गई मानों वर्षा ऋतु ने अपना बुढ़ापा (कास रूपी सफेद बालों के रूप में) प्रकट किया है।

नाम- रजनी कुमारी सिंह
वर्ग - बी. एड
क्रमांक - 44 'D'

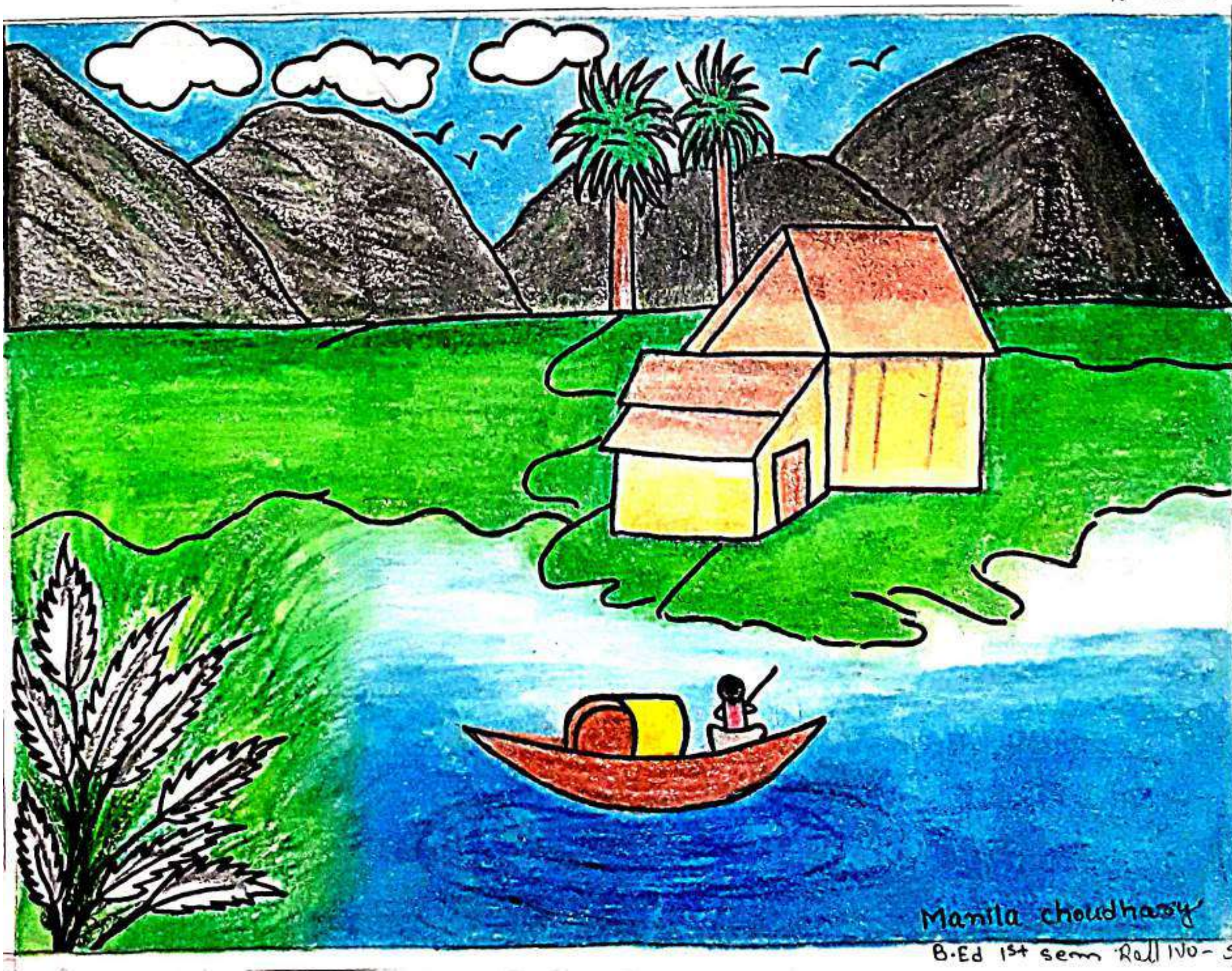

Manila choudhary
B.Ed 1st sem Roll No - 54

शरद ऋतु की वेला

शरद ऋतु की वेला आई रे !
पतझड़ के मारे पेड़ों की
सूखी शाखाओं के लिए
उम्मीद की नई स्वर्णिम किरण लाई रे !
शरद ऋतु की वेला आई रे !
सरोवर की शीतल जल को छूकर
मलय समीरण आई रे
संग अपने रंगों के बहार लाई रे
पेड़ों पर फिर से बसेरा करने को
चिड़ियों की मधुर - मधुर चहचहाहट
पड़ने लगी सुनाई रे !
खेतों में पीली सरसों की फूलें
भी हैं इठलाई रे
शरद ऋतु की वेला आई रे !

-MANSHI KUMARI
ROLL :- 39
CLASS:- B.Ed (A)

"शरद ऋतु का आगमन"

बीत गई बरसात की बेला,
शरद ऋतु अब आई है।
दिन सामान्य हो भले,
रातों की ठंडक लाई है।
सफेद चादर बिछी हो जैसे,
धरती पूरी शालीन दिख रही।
पत्तों से पटा वन उपवन,
प्रकृति सादगी सीख रही।
पूर्णिमा की वो रात सुरीली,
जगमग जब संसार हुआ।
चाँद चला सीना तान तब,
अंधेरे में ऐसा प्रकाश हुआ।
शीतलता अनोखी छा रही,
वर्षा बादलों में छुप खड़ी है।
मनोरम दृश्य हो रहा मानो,
दूध - सी पृथ्वी हो चली है।

मनीला चौधरी
बी. एड
54

"शरद ऋतु की वेला"

शरद ऋतु की वेला आई रे
पतझड़ के मारे पेड़ों की
सूखी शाखाओं के लिए
उम्मीद की नई स्वर्णिम किरण लाई रे।
शरद ऋतु की वेला आई रे
सरोवर की शीतल जल को छूकर
मलय समीरण आई रे
संग अपने रंगों की बहार लाई रे
पेड़ों पर फिर से बसेरा करने को
चिड़ियों की मधुर - मधुर चहचहाहट
पड़ने लगी सुनाई रे।
खेतों में पीली सरसों की फूलों
भी है इठलाई रे
शरद ऋतु की वेला आई रे।

- पुजा कुमारी
B.Ed (1st Sem)
Roll no. - 2

"शरद ऋतु का आगमन"

बीत गई बरसात की बेला,
शरद ऋतु अब आई है।
दिन सामान्य हो भले,
रातों की ठंडक लाई है।
सफेद चादर बिछी हो जैसे,
धरती पूरी शालीन दिख रही।
पत्तों से पटा वन उपवन,
प्रकृति सादगी सीख रही।
पूर्णिमा की वो रात सुरीली,
जगमग जब संसार हुआ।
चांद चला सीना तान तब,
अंधेरे में ऐसा प्रकाश हुआ।
शीतलता अनोखी छा रही,
वर्षा बादलों में छुप खड़ी है।
मनोरम दृश्य हो रहा मानो,
दूध - सी पृथ्वी हो चली है।

"शरद आई"

ऐसी एक है ऋतु आई,
सबको चादर है ओढ़ाई।

रातों को लम्बी कर देती है,
सुबह में कोहरा भर देती है।
पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं,
सब प्राणी कांप जाते हैं।
ऐसी मौसम ने ली अंगड़ाई,
सब पर ठंडक है बरसाई।
सूरज चाचू लगते प्यारे,
सब धूप ताप कर राहत पाते।

ऐसी एक है ऋतु आई,
सबको चादर है ओढ़ाई।

इस ऋतु की है अनोखी बात,
सब जगह कर दे मौसम साफ।
सारे पत्तों पे ओस की बूंदें,
मानो सब ने मोती चुने।
ना ठंडाई, ना आईसक्रीम भाये,
सुबह की ठंडक भरी शुरुआत,
गरम खाने से बनती बात

ऐसी एक है ऋतु आई
सबको चादर है ओढ़ाई

जब आग जला कर सब बैठे पास,
पूरा परिवार हो जाता साथ।
दादा-दादी की कहानी,
कर देता इस ऋतु को खास।
फूलों की कलियाँ जब खिलते,
भौंरे उस पर गुंजन करते।
चाँद अपना लेकर अलग रूपों,
चमकता आसमान में तारों के संग।

ऐसी एक है ऋतु आई,
सबको चादर है ओढ़ाई

नाम - पूजा कुमारी
वर्ग - B.Ed (Sem-1)
क्रमांक - 66 (Sec-B)

कविता :-

आया सर्दी का यह मौसम,
काँपा तन काँपे मन,
आया सर्दी का यह मौसम।
चाँदनी रात लगे प्यारी,
त्योहारों की लगी झड़ी।
खाने - पीने की मौज बनी,
आया सर्दी का मौसम।
तापमान गिरता झर - झर,
ठंडी हवा चले सर - सर,
कँपकपी न रुके पल - भर,
आया सर्दी का यह मौसम।
धूप चमके मन को भाए,
कंबल से निकला न जाए।
आग सेंकना बहुत सुहाए,
आया सर्दी का यह मौसम।

Name:- Puja Kumari
Class:- B.Ed
Roll No:- 165
Session:- 2020-22

• शरद ऋतु का आगमन •
मौसम भी करवट बदल रहे,
एक रंग नई सी छाई है।
सूने गगन चहचहाने लगे,
और फूल भी इतराई है।।
बादल भी उमड़-घुमड़ रहे हैं,
कहीं हल्की सी अंगड़ाई है।
पानी भी पवन से खेल रहे,
हर पेड़ को गले लगाई है।।
कहीं ठंड है, कहीं नरम धूप, कहीं गरमा-गरम चाय है।
कोई बादलों का मजा लेते, तो कोई घर में ओढ़े रजाई है।।
खेतों मे हरियाली और, चेहरे पे खुशियाँ छाई है।
ऐ घटा! ऐसे ही छाए रहना, तू (शरद ऋतु)
सबके मन को भाई है।।
• SUNIDHI KUMARI
B. Ed 1st Sem
Roll :- 158

शरद ऋतु का आगमन

नवल रूप बिखरा है, धरा पर।
आज शरद ऋतु आयी है।
उदय भास्कर हुआ गगन पर,
स्वर्ण किरण लहराई है।
सरवर का शीतल जल छूकर,
मलय समीरण आयी है।
कलरव मधुर मधुर चिड़ियों का,
पड़ने लगा सुनाई है।
मौसम के संग उपवन में भी,
नूतन रंगत आई है।
खेतों में पीली सरसों भी,
फूली है, इठलाई है।
श्वेत सुगंधित सेवंती ने,
छटा नयी बिखरायी है।
मुदित हुए सब जन मौसम में
बड़ी खुमारी छायी है।

Sheetal Kumari
Roll 29'A'
B.Ed 1st S

Name - Rozy Sweta Murmu Roll No - 37 (B.Ed)(20

"शरद ऋतु का आगमन"

निकलो भी अब सूरजदादा
बनो न जिद्दी इतने ज्यादा
सभी ठंड से सिकुड़ रहे हैं
घूम रहे हैं पहन लबादा।

जब से है यह सर्दी आई
रहती धुंध देर तक छाई,
शीत लहर चलती जोरों से,
लगता ओढ़े रहें रजाई।

धूप हुई है पीली-पीली,
मरी-मरी-सी ढीली-ढीली,
गर्मी खोकर आज हुई यह
जली हुई माचिस की तीली।

किटकिट करके दाँत बोलते
मुँह भी बनता नहीं बोलते
रोज नहाने से पहले अब
हिम्मत अपनी लोग हारते।

तुम भी अब देरी से आते,
और शाम जल्दी चले जाते।
कहाँ गए गर्मी के तेवर
दिनभर क्यों रहते सुस्ताते।

चीर कोहरे की अब चादर
बिखरा दो किरणों की गागर,
ठिठुराते जीवों को राहत
दे दो सूरज दादा आकर।

Name :- Abha Kumari
Class :- B.Ed (Sem-1)
Roll :- 87 (Sec A)

"शरद ऋतु का आगमन"

सिमट गयी फिर नदी, सिमटने में चमक आयी
गगन के बदन में फिर नयी एक दमक आयी
दीप कोजागरी बाले की फिर आवें वियोगी सब
ढोलकों में उछाल और उमंग की गमक आयी
बादलों के चुम्बनों से खिल
शरद की धूप में नहा-निखर कर हो गयी है मतवाली
झुंड कीरों के अनेकों फबतियाँ कसते मँडराते
झर रही है प्रान्तर में चुप-चाप लजीली शेफाली
बुलाती ही रही उजली कछार की खुली छाती
उड़ चली कहीं दूर दिशा को धौली बक-पांती
गाज-बाज बिजली से घेर इन्द्र ने जो रखी थी
शारदा ने हँस के वो तारों की लुटा दी पाती
मालती अनजान भीनी गंध का है झीना जाल फैलाती
कहीं उसके रेशमी फंदे में शुभ्र चाँदनी पकड़ पाती!
घर-भवन-प्रसाद खण्डहर हो गये किन किन
लताओं की जकड़ में
गन्ध, वायु, चाँदनी, अलग रही मुक्त इठलाती!
साँझ सुने नील में दोले है कोजागरी का दिया
हार का प्रतीक - दिया सो दिया, भुला दिया जो किया!
किन्तु शारद चाँदनी का साक्ष्य, यह संकेत जय का है

Name :- Rajni Kumari Singh
Roll :- 44
Class :- B.Ed

Name - Rozy Sweta Murmu Roll No - 37 (B.Ed) (2020